Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऊँचनीच का भाव निरर्थक !

बी०
१५६

३

लेखक
वियोगी हरि

प्रकाशक
बिहार हरिजन सेवक संघ
पटना

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऊँचनीच का भाव निरथक !

[आकाशवाणी दिल्ली द्वारा प्रसारित 'अस्पृश्यता : सुधारक और उनके कार्य'—शीर्षक श्री वियोगी हरि की यह वार्ता महत्वपूर्ण और विशेष रूप से मनन करने योग्य है।]

इतिहास की प्राचीन और माध्यमिक धाराओं से यह स्पष्ट होता है कि जब से उच्च-नीच-भाव और अस्पृश्यता का प्रारम्भ हुआ, तभी से उसे दूर करने और मिटाने के भी प्रयत्न शुरू हो गए थे। वज्रसूचिकोपनिषद् मनुष्यकृत, न कि ईश्वरकृत, वर्णभेद और जाति-पांति के आधार पर खड़े उच्च-नीच-भाव के मिथ्यात्व और उससे उत्पन्न पाप की बाहु उठाकर घोषणा करती है, जैसे—

"आचण्डालादिपर्यन्तानां मानुषाणां पांचभौतिकत्वेन देहरयैकरूपत्वात् जरामरणधर्मादिसाम्यदर्शनात्। ब्राह्मणः श्वेतवर्णः क्षत्रियो रक्तवर्णः वैश्यः पीतवर्णः शूद्रःकृष्णवर्णः इतिनियमाभावात्॥"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

अर्थात् चाण्डाल से लेकर सभी मनुष्यों के शरीर पाँचभौतिक और एक ही तरह के हैं। सर्वत्र ही जरा-मरण-धर्म की एकता दिखती है। ऐसा तो कोई नियम नहीं दिखाई देता, कि ब्राह्मण श्वेतवर्ण का हो, क्षत्रिय रक्तवर्ण का हो, वैश्य पीतवर्ण का हो और शूद्र कृष्णवर्ण का हो।

भगवान् बुद्ध के सुवचन तो और भी अधिक इस बात को स्पष्ट कर रहे हैं, जैसे 'धम्मपद' ब्राह्मण की सच्ची परिभाषा मिलती है :—

सब्ब सञ्ञजनं छेत्वा यो वे न परितस्सति।
संगातिगं विसञ्ञुत्तं तमहं ब्रूमि ब्राह्मणं॥

जो मनुष्य सब बन्धनों को काट देता है, जो निर्भय है, जो संग या आसक्ति से रहित है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

कोशलराज प्रसेनजित् ने भगवान् बुद्ध के सामने एक बार वर्ण-भेद की इस पहेली को रखा था, जिसका उत्तर भगवान् ने एक कहानी सुनाते हुए दिया :—

"ब्राह्मण और चाण्डाल एक ही योनि से पैदा होते हैं। ब्राह्मण कहीं आकाश से नहीं टपक पड़ते।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण ये तो केवल भिन्न-भिन्न नाम हैं, जो मनुष्य द्वारा रख दिये गए हैं, जैसे :—

बालक सड़क पर खेलते हैं और मिट्टी के भाँति-भाँति के व्यंजन बना-बनाकर आप ही उनके अलग-अलग नाम रख देते हैं—किसी को खीर, किसी को दही, किसी को घी कहते हैं, परन्तु उन बालकों के कहने से वे मिट्टी के खिलौने सचमुच वैसे बन नहीं जाते। इसी प्रकार मनुष्य के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि अलग-अलग नाम लेने से उनमें सचमुच का भेद पैदा नहीं हो जाता। जैसे भेद गाय, बकरी, घोड़े आदि जानवरों में परस्पर पाये जाते हैं, वैसे कोई भेद मनुष्यकृत इन चार वर्णों में नहीं दिखाई देते।"

भगवान् बुद्ध के संघ में ऊँच-नीच के भेद-भाव के लिए तनिक भी स्थान नहीं था। संघ में सभी जातियों के भिक्षु रहते थे। एक तथाकथित चाण्डाल-कुल में जन्म लेनेवाले सुनीत को भगवान् ने स्वयं प्रव्रज्या दी थी। भिक्षु सुनीत कहता है,—देव-संघ जब मेरा सत्कार कर चुका, तब भगवान बुद्ध ने मेरी ओर देखा और मुस्कराकर कहा :—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तपेन ब्रह्मचरियेन संयमेन दमेन च ।
एतेन ब्राह्मणो होति एतं ब्राह्मणमुत्तमं ॥

++ ++ ++

और भगवान् बुद्ध के प्रिय शिष्य आनन्द की भी बौद्ध-साहित्य में एक बड़ी सुन्दर कथा मिलती है :—

आनन्द एक दिन नगर में भिक्षा माँगने गये। रास्ते में उन्हें प्यास लगी। पास के कुएँ पर एक कन्या पानी खींच रही थी। आनन्द ने उससे पानी माँगा। उसने कहा, 'मैं चाण्डाल-कन्या हूँ।'

'मैंने तुमसे जाति नहीं माँगी थी, मैंने तो पानी माँगा है।' आनन्द ने उत्तर दिया।

बाद को भगवान् बुद्ध ने उस चाण्डाल-कन्या को भिक्षुणी-संघ में प्रविष्ट कर लिया।

नवीं शताब्दी के सिद्ध सरहपाद ने भी ऐसा ही गाया है :—

ब्रह्मणेहि म जाणन्त भेउ । एवइ पढिअउ एचउ वेउ ॥
मट्टी पाणी कुस लइ पढन्त । घरहिं वइसी अग्गि हुणन्त ॥
कज्जे विरहइ हुअवह होमें । अक्खि डहाविअ कडुएं धुम्में ॥

कहते हैं, ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुए थे। हुए होंगे कभी, पर आज तो प्रत्यक्ष में वे भी दूसरे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लोगों की तरह योनि से ही पैदा होते हैं। वेद को ब्राह्मण पढ़ते हैं; अन्त्यज-चाण्डाल भी तो वेद पढ़ सकता है। यह ब्राह्मण हाथ में कुश और जल लेकर घर में बैठे हवन करते हैं। होम करने से मोक्ष मिले या नहीं, कड़ुआ धुआँ लगने से आँखों को पीड़ा अवश्य होती है।

++ ++ ++

जैन मुनी देवसेन ने, जो दशमी शताब्दी में हुए थे, श्रावक धर्म का द्वार सबके लिए खोल दिया था। उन्होंने कहा है—

एहु धम्मु जो आयरइ बंभणु सुद्द वि कोई।
सो सावउ किं सावयह अण्णु कि सिरि मणिहोइ॥

इस धर्म का जो भी आचरण करता है, चाहे ब्राह्मण हो चाहे शूद्र, वही श्रावक है। श्रावक के सिर पर क्या कोई मणि चिपकी रहती है?

इसी प्रकार ग्यारहवीं शताब्दी के जैन मुनि रामसिंह ने भी छूत-अछूत का खण्डन किया है—

कासु समाहि करउं को अंचउं।
छोपु अछोपु भणिवि को वंचउं॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

समाधि किसकी लगाऊँ? पूजूँ किसे? छूत और अछूत कहकर किसे छोड़ूं और किसके साथ कलह करूँ?

जगद्गुरु गोरखनाथ और उनके पश्चात् संतवर कबीर और कथित अन्त्यज-कुलोत्पन्न भक्तमालकार नाभा ने अभेददर्शी स्वामी रामानन्द का भक्ति-प्रसाद पाकर जाति-पाँति और छूत-अछूत के टुकड़े-टुकड़े कर दिये हैं। कबीर साहब का यह शब्द प्रसिद्ध है :—

पंडित, देखहु मन महँ जानी।
कहु धौं छूत कहाँ ते उपजी,
तबहि छूत तुम मानी?

वैष्णवाचार्य रामानुज और प्रेमावतार चैतन्य महाप्रभु ने अपने सम्प्रदायों में बिना किसी भेद के सभी को समान स्थान दिया था, सभी को हरि-रस में सराबोर कर दिया था।

महाराष्ट्र के महान् संत एकनाथ महाराज के जीवन का एक बड़ा पवित्र प्रसंग है।

पैठण में रनिया नाम का एक महार-अन्त्यज रहता था। एकनाथ महाराज का वह बड़ा भक्त था। एक

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

दिन रनिया के मन में आया कि एकनाथ महाराज को अपने घर पर भोजन करने के लिए बुलाना चाहिए। उसने उनको भोजन करने का निमन्त्रण दिया। एकनाथ ने स्वीकार कर लिया। ब्राह्मणों ने इस पर बड़ा हो-हल्ला मचाया। परन्तु एकनाथ महाराज बेखटके सबके सामने अपने घर से निकले और रनिया महार के घर पहुँचे। भक्तिगद्गद रनिया और उसकी स्त्री ने आसन बिछाया, पत्तल रखी, चौक पूरा और एकनाथ महाराज से बैठने के लिए प्रार्थना की। एकनाथजी ने आसन पर बैठकर उस महार-दम्पति के हाथों से बड़े प्रेम से भोजन किया। उन्होंने कहा—

जन्म कर्म वर्णाश्रम जाती,
पूर्ण भक्त होती न धरिती।
चहूँ देहाँची अहंकृति।
स्वप्नीं ही न धरिता हरिभक्त॥

फिर महान् सुधारक राजा राममोहनराय, केशवचन्द्र सेन और महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने तथा आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने और परमहंस रामकृष्णदेव के पट्टशिष्य स्वामी विवेकानन्द ने भी अस्पृश्यतारूपी बुराई की धज्जियाँ उड़ाई हैं। स्वामी विवेकानन्द अस्पृश्यता माननेवाले रूढ़िवादियों को फटकारते हैं—

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

"छुओ मत, यह एक तरह का दलदल है, जिसमें फँसकर न जाने कितने प्राण गँवा चुके हैं। अतः इस 'छुओ मत' से सावधान। यह 'छुओ मत' न तो वेदों में है, न पुराणों में। आज का ब्रह्म सर्वव्यापक कहाँ रहा? अगर कहीं है तो सिर्फ रसोई की बटलोई में। इस छुआछूत ने ही हमें इतना नीचे गिराया है और हमारे देश को कायर बना डाला है। तो फिर क्यों नहीं इस अस्पृश्यता-राक्षसी को नष्ट कर देते हो?"

++ ++ ++

महाराष्ट्र में आज से सौ वर्ष पहले महात्मा ज्योतिराव फुले ने अस्पृश्यता-निवारण का व्यावहारिक रूप से आन्दोलन चलाया था। ज्योतिराव फुले को डा० अम्बेडकर अपना एक सद्गुरु मानते हैं। उन्होंने बहुत पहले अपने कुटुम्बियों के ही समान समझकर अछूतों के हाथ से भोजन किया और अपने सैकड़ों अनुयायियों को कराया था। अपने हौज से माँग-महारों और चमारों का पानी भरवाया था। उनका कहना था कि,—"यह मानना बड़ी भूल है कि एक मनुष्य के छूने से दूसरा मनुष्य अपवित्र हो जाता है। यह बात न तो भगवान् को मंजूर है, न धर्म को। यह कुरीति तो मनुष्य की अपनी बनाई हुई चीज है।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पूना के कुछ रूढ़ि-चुस्त सनातनियों ने, जब दो जल्लादों को ज्योतिबा का वध करने के लिए भेजा, तब उस ध्यानमग्न महात्मा ने आँखें खोलकर कहा, "चलाओ अपनी तलवार। कभी-न-कभी तो यह देह गिरने ही वाली है, तब इससे यदि तुम्हारे बाल-बच्चों के मुंह में दो टुकड़े पड़ते हैं, तब तुम्हारे कल्याण का फल मैं क्यों न प्राप्त कर लूँ ?" जल्लादों ने तलवार फेंक दी और पश्चाताप की आग में जलते हुए महात्मा फुले के चरणों पर गिर पड़े। ज्योतिबा ने प्रार्थना की "हे ईश्वर, सत्यशोधक पंथ का प्रचार करने में तू मेरी सहायता कर, और असत्य मार्ग पर चलनेवालों के हृदय तक तेरा यह सत्य-प्रकाश पहुँचने दे।"

ठक्कर बापा के एक गुरु महर्षि विट्ठलराम शिन्दे ने भी अस्पृश्यता-निवारण के क्षेत्र में बहुत बड़ा काम किया था। उन्होंने कहा था—"यदि एक महार अपनी जाति और धर्म को छोड़कर ईसाई बन जाता है, तो वह ईसाई-धर्म में धर्मगुरु तक बन सकता है। लेकिन क्योंकि उन भाइयों ने केवल अपने धर्म की परम्परा की रक्षा की, इसलिए हम उन्हें बहिष्कृत मानने लगे। यह अत्यन्त निराशा और अन्याय से भरी स्थिति है।"

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गोपाल गणेश आगरकर, जो पहले लोकमान्य तिलक और महात्मा गोखले के साथियों में से थे, महाराष्ट्र के कट्टर समाज-सुधारक थे। उनकी मान्यता थी कि अस्पृश्य माने जानेवाले महारों और माँगों की स्थिति सुधारकर उनको एवं वेद-सम्पन्न ब्राह्मणों को मैं एक ही पंक्ति में देखूँ तो मैं अपने-आपको अत्यन्त कृतार्थ मानूंगा।"

लोकमान्य तिलक ने भी अस्पृश्यता को एक अधर्म ही माना। उन्होंने कहा है, कि "अस्पृश्यता का कोई शास्त्रीय आधार नहीं है। परमेश्वर के मन्दिर का दरवाजा किसी के लिए बन्द नहीं है, और वह यदि बन्द हो जाय, तो परमेश्वर परमेश्वर नहीं रहता, ऐसा मैं मानता हूँ।"

परन्तु राष्ट्रव्यापी रूप में व्यवहारतः शुद्ध धर्म-दृष्टि को लेकर महात्मा गान्धी ने ही अस्पृश्यता-निवारण का अपूर्व अनुपम कार्य किया, मानो पुराकाल के संत-महात्माओं की वाणी का व्यावहारिक भाष्य उन्होंने युग-पट्टिका पर लिख डाला। गान्धीजी ने अस्पृश्यता को महापाप और हिन्दू-धर्म पर महाकलंक बताया और उसका प्रायश्चित करने के लिए हिन्दू-समाज को भारी प्रेरणा दी। पूज्य बापू ने यहाँ तक कामना की कि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

'मैं पुनर्जन्म नहीं चाहता, पर यदि मेरा पुनर्जन्म हो तो मैं अछूत कहे जानेवाले किसी कुल में पैदा होना चाहूँगा, ताकि मैं उनके दुखों का साथी बन सकूं, उनके कष्टों और अपमानों को भोगूं और दुखमय अवस्था से उनके उद्धार का यत्न करूँ। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि यदि मेरा पुनर्जन्म हो तो मैं न क्षत्रिय के घर पैदा होऊँ, न ब्राह्मण के, न वैश्य के, न शूद्र के, बल्कि किसी भंगी के घर में मेरा जन्म हो।'

गान्धीजी ने सबसे पहले अपने आश्रम में एक ढ़ेढ़ कुटुम्ब को अपने परिजनों के समान प्रेमपूर्वक रखा और उस ढ़ेढ़ की लड़की को गोद भी ले लिया।

गान्धीजी ने स्पष्ट कहा है—"ऐसे हरेक वचन को, जिसके लिए धर्म-शास्त्र का वचन होने का दावा किया गया है, सत्य की निहाई पर दयारूपी हथौड़े से पीटकर देख लेना चाहिए। अगर वह पक्का मालूम दे और टूट न जाय, तभी उसे ठीक समझना चाहिए।"

गान्धीजी ने अस्पृश्यता-निवारण और हरिजन-सेवा के लिए हरिजन-सेवक-संघ की स्थापना की, और इस महान् यज्ञ का पुरोहित ठक्कर बापा को बनाया। बापा ने इस क्षेत्र में इतना बड़ा काम किया, जिसकी नाप--

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तोल नहीं हो सकती है। वे सच्चे अर्थ में दया-सिन्धु, दलित-दीन-दुखियों के बन्धु थे। वे जिसे धर्म मानते थे, उसी का सदा चिन्तन करते थे, वही उनकी वाणी से निकलता था और उसका वे आचरण करते थे। ठक्कर बापा ने सैकड़ों-हजारों को हरिजनों का सेवक बनाया, करुणा धर्म की ज्योति जलाई और अपने निर्दिष्ट काय को करते-करते ही नश्वर देह का त्याग किया।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

जिस प्रथा की बदौलत हिन्दुओं का एक बड़ा भाग पशु से भी बदतर हालत को जा पहुँचा है, उसके लिए मेरे रोम-रोम में घृणा भर रही है। जिस धर्म के अनुयायियों के कारण अछूतों को पानी भी मिलना दुश्वार हो जाये, उसकी निर्दयता को क्या कहा जाये? पानी का त्रास तो एक दुश्मन को भी नहीं दिया जा सकता। और यह सब होता है धर्म के नाम पर!

मैं मानता हूँ कि जैसा हमने बोया है, वैसा ही हम फल पा रहे हैं। हरिजनों का अपमान करके हम सारे संसार में अपमानित हो रहे हैं।

—महात्मा गांधी